हिन्दी साहित्य : पाठ्यक्रम

बी0ए0 : साहित्यिक हिन्दी

(प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष का निर्धारित पाठ्यक्रम)

क्रमशः सत्र : 2020–21, 2021–22 तथा 2022–23 से प्रभावी

प्रोफेसर श्रद्धानन्द
1–बाह्य सदस्य, अध्ययन समिति

प्रोफेसर कुमार पंकज
2–बाह्य सदस्य, अध्ययन समिति

डॉ0 अमलदार 'नीहार'
संयोजक, अध्ययन समिति

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया(उ0प्र0)

बी0ए0 भाग एक

प्रथम प्रश्पनत्र : मध्यकालीन कविता

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश——

1—यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2—प्रत्येक इकाई से दो व्याख्या, दो दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक व्याख्या, एक दीर्घ उत्तरीय एवं एक लघु उत्तरीय प्रश्न का उत्तर लिखना होगा।

3—प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे——

(क) 04 व्याख्या(प्रत्येक इकाई से एक) =4X8=32 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 150)

(ख) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X12=48 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ग) 04 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X5=20 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

.....

यूनिट(इकाई) पाठ्य विषय

.....

एक

कबीरदास : गुरुदेव कौ अंग, प्रेम विरह कौ अंग(कबीर ग्रन्थावली—सं0 श्याम सुन्दर दास)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आचोचना : भक्ति भावना, समाज—दर्शन, रहस्यवाद, काव्य—सौन्दर्य

मलिक मुहम्मद जायसी : नागमती वियोग खण्ड(जायसी ग्रन्थावली—सं0 रामचन्द्र शुक्ल)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : सौन्दर्य वर्णन, प्रेम वर्णन, विरह वर्णन, रहस्यवाद, काव्य सौन्दर्य

.....

दो

सूरदास : भ्रमरगीतसार—सं0 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल(आरम्भ के 25 पद)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : सूरदास का श्रृंगार वर्णन, वात्सल्य वर्णन, सौन्दर्य वर्णन, भमरगीत का काव्य—सौन्दर्य, भक्ति भावना

तुलसीदास : रामचरितमानस(अयोध्या काण्ड दोहा संख्या 51 से 80 तक)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : तुलसीदास का काव्य—सौन्दर्य, समन्वय—भावना, लोकमंगल, मार्मिक प्रसंगों का महत्त्व, भक्ति—भावना

तीन

मीराबाई : डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी की पुस्तक 'मीरा का काव्य' में संकलित आरम्भिक कुल 12 पद
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : मीराबाई का काव्य—सौन्दर्य, प्रेम और विरह, स्त्री—सन्दर्भ

घनानन्द : आनन्दघन–डॉ0 रामदेव शुक्ल(आरम्भ के 15 छन्द)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : प्रेम और विरह, काव्य–सौन्दर्य, काव्य–भाषा

बिहारी : बिहारी रत्नाकर–सं0 जगन्नाथदास रत्नाकर(दोहा संख्या–1, 18, 20, 32, 38, 41, 42, 51, 52, 60, 85, 94, 141, 171, 201, 230, 255, 300, 301, 321)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना–काव्य–सौन्दर्य, श्रृंगार, भक्ति एवं नीति तत्त्व, रीतिसिद्ध कवि बिहारी

चार

भूषण : भूषण ग्रन्थावली–सं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र(छन्द संख्या–1, 2, 15, 48, 50, 53, 55, 61, 65, 76, 81, 83 =कुल 12 छन्द)
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : वीर काव्यधारा का वैशिष्ट्य, भूषण में वीर रस की अभिव्यक्ति, राष्ट्रीय चेतना, काव्य–शिल्प

सन्दर्भ ग्रन्थ /सहायक ग्रन्थ

1–बच्चन सिंह, 2005, रीतिकालीन कवियों की प्रेम–व्यंजना, लोकभारती, इलाहाबाद
2–रामचन्द्र शुक्ल, 1945, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
3–रामचन्द्र तिवारी, 1997, मध्ययुगीन काव्य साधना, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या
4–विजयदेव नारायण साही, 1983, जायसी, हिन्दुस्तानी उकेडमी, इलाहाबाद
5–शिवकुमार मिश्र, 1999, भक्ति आन्दोलन भौर भक्ति काव्य, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
6–हजारी प्रसाद द्विवेदी, 1971, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7–हजारी प्रसाद द्विवेदी, 1948, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

द्वितीय प्रश्नपत्र : नाटक, निबन्ध एवं प्रकीर्ण गद्य–विधाएँ

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश––

1–यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2–प्रत्येक इकाई से दो व्याख्या, दो दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक व्याख्या, एक दीर्घ उत्तरीय एवं एक लघु उत्तरीय प्रश्न का उत्तर लिखना होगा।

3–प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे––

(क) 04 व्याख्या(प्रत्येक इकाई से एक) =4X8=32 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 150)

(ख) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X12=48 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ग) 04 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X5=20 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

यूनिट(इकाई)	पाठ्य विषय
एक	नाटक : ध्रुवस्वामिनी–जयशंकर प्रसाद अथवा कोणार्क(जगदीश चन्द्र माथुर) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आचोचना : नाट्यकला, इतिहास, कल्पना और आधुनिक संवेदना, चरित्र–विन्यास, प्रासंगिकता
दो	एकांकी : कौमुदी महोत्सव(राम कुमार वर्मा), लक्ष्मी का स्वागत(उपेन्द्रनाथ अश्क), परिचय(लक्ष्मीनारायण लाल), सीमारेखा(विष्णु प्रभाकर), स्ट्राइक(भुवनेश्वर) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : एकांकी कला की दृष्टि से मूल्यांकन, प्रासंगिकता और महत्त्व
तीन	निबन्ध : साहित्य की महत्ता(महावीर प्रसाद द्विवेदी), करुणा–(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल),अशोक के फूल(हजारी प्रसाद द्विवेदी), तमाल के झरोखे से(विद्यानिवास मिश्र), प्रिया नीलकण्ठी(कुबेरनाथ राय) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : निबन्ध कला की दृष्टि से मूल्यांकन एवं प्रतिपाद्य
चार	प्रकीर्ण गद्य–विधाएँ : जीवनी–प्रेमचन्द–लमही में जन्म एवं अन्तिम बीमारी (अमृत राय), आत्मकथा–सृजन का सुख(हरिवंशराय बच्चन), संस्मरण–तीस बरस का साथी(रामविलास शर्मा), रेखाचित्र–गिल्लू(महादेवी वर्मा), यात्रा–वृत्तान्त–आखिरी चट्टान(मोहन राकेश) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना–जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा–वृत्तान्त विधा की प्रकृति एवं विशेषताओं के आधार पर संकलित रचनाओं की समीक्षा।

सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक ग्रन्थ :

1–गिरीश रस्तोगी, 1990, समकालीन हिन्दी नाटक की संघर्ष–चेतना, हरियाणा साहित्य अकादमी, अलीगढ़

2–बच्चन सिंह, 1989, हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

3–रामचन्द्र तिवारी, 1992, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

5–रामचन्द्र शुक्ल, 1945, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
6–सिद्धनाथ कुमार, 1978, प्रसाद के नाटक, अनुपम प्रकाशन, पटना

बी0ए0 भाग दो

प्रथम प्रश्नपत्र : आधुनिक कविता

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश––

1–यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2–प्रत्येक इकाई से दो व्याख्या, दो दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक व्याख्या, एक दीर्घ उत्तरीय एवं एक लघु उत्तरीय प्रश्न का उत्तर लिखना होगा।

3–प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे––

(क) 04 व्याख्या(प्रत्येक इकाई से एक) =4X8=32 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 150)

(ख) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X12=48 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ग) 04 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X5=20 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

यूनिट(इकाई)	पाठ्य विषय
एक	मैथिलीशरण गुप्त : साकेत–(अष्टम सर्ग) व्याख्या : 'यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को' से लेकर 'इस कारण वह कुछ खेद मानता है कब? पंक्ति तक आचोचना : कैकेयी का विरण वर्णन, अष्टम सर्ग का काव्य–सौन्दर्य जयशंकर प्रसाद : कामायनी(श्रद्धा सर्ग) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ से आलोचना : छायावादी काव्यप्रवृत्तियाँ एवं कामायनी, श्रद्धा सर्ग का काव्य–सौन्दर्य
दो	सुमित्रानन्दन पन्त : पल्लव, प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र व्याख्या : उपर्युक्त पाठ से आलोचना : पन्त का प्रकृति वर्णन एवं सौन्दर्य–दृष्टि, काव्य–सौन्दर्य, संकलित कविताओं का छायावादी काव्य–तत्त्वों के आधार पर मूल्यांकन सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला : वर दे, वीणावादिनि! वर दे, भारति जय विजय करे, सन्ध्या सुन्दरी के प्रति, तोड़ती पत्थर व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : निराला की प्रगतिशील चेतना, सौन्दर्य–दृष्टि, काव्य–सौन्दर्य, संकलित कविताओं का महत्त्व।
तीन	अज्ञेय : अच्छा खण्डित सत्य, नदी के द्वीप, दूर्वांचल व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : प्रयोगवाद और अज्ञेय, काव्य–सौन्दर्य, संकलित कविताओं का महत्त्व

मुक्तिबोध : विचार आते हैं, मैं उनका ही होता, भूल–गलती
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ से
आलोचना : मुक्तिबोध की जनपक्षधरता, प्रगतिवाद और मुक्तिबोध, काव्य–सौन्दर्य, कविताओं का महत्त्व

रामधारी सिंह दिनकर : कुरुक्षेत्र(प्रथम सर्ग)
व्याख्या ' उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना : कुरुक्षेत्र का महत्त्व, परम्परा और आधुनिकता, काव्य–सौन्दर्य

चार

नागार्जुन : अकाल और उसके बाद, बादल को घिरते देखा है
व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से
आलोचना :नागार्जुन की जनवादी चेतना, काव्य–सौन्दर्य, संकलित कविताओं का महत्त्व

सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक ग्रन्थ :

1–नगेन्द्र, 1976, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2–नामवर सिंह, 1955, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3–बच्चन सिंह, 1996, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
4–रामचन्द्र शुक्ल, 1945, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5–रामदरश मिश्र, 1986, आधुनिक हिन्दी कविता :सर्जनात्मक सन्दर्भ, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
6–रामस्वरूप चतुर्वेदी, 1986, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

द्वितीय प्रश्नपत्र : कथा साहित्य

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश––

1–यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2–प्रत्येक इकाई से दो व्याख्या, दो दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक व्याख्या, एक दीर्घ उत्तरीय एवं एक लघु उत्तरीय प्रश्न का उत्तर लिखना होगा।

3–प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे––

(क) 04 व्याख्या(प्रत्येक इकाई से एक) =4X8=32 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 150)

(ख) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X12=48 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ग) 04 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X5=20 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

यूनिट(इकाई)	पाठ्य विषय
एक	उपन्यास : कर्मभूमि–प्रेमचन्द व्याख्या : उपर्युक्त पाठ से आलोचना : उपन्यास की संवेदना एवं शिल्प, स्वाधीनता, मुक्ति का सन्दर्भ और कर्मभूमि का महत्त्व, उपन्यास–कला के तत्त्वों की दृष्टि से समीक्षा
दो	उपन्यास : अमिता(यशपाल) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : उपन्यास : स्वरूप एवं विकास, औपन्यासिक दृष्टि से 'अमिता' उपन्यास का विवेचन
तीन	कहानी : उसने कहा था(चन्द्रधर शर्मा गुलेरी), गुण्डा(जयशंकर प्रसाद), पूस की रात(प्रेमचन्द), कर्मनाशा की हार(शिवप्रसाद सिंह), यही सच है(मन्नू भण्डारी) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : कहानी–कला की दृष्टि से विवेचना, संकलित कहानियों की संवेदना एवं महत्त्व
चार	कहानी : रोज(अज्ञेय), लाल पान की बेगम(फणीश्वरनाथ रेणु), दिल्ली में एक मौत(कमलेश्वर), वापसी(उषा प्रियंवदा), घण्टा(ज्ञानरंजन) व्याख्या : उपर्युक्त पाठ्य विषय से आलोचना : कहानी–कला की दृष्टि से विवेचना, संकलित कहानियों की संवेदना एवं महत्त्व

सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक ग्रन्थ :

1–चन्द्रकान्त वांदिवडेकर, 1993, उपन्यास : स्थिति और गति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

2–परमानन्द श्रीवास्तव, 2012, कहानी की रचना प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

3–मधुरेश, 2001, हिन्दी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद

4–राजेन्द्र यादव, 1998, उपन्यास : स्वरूप और संवेदना

5–रामचन्द्र तिवारी, 1992, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

6–रामविलास शर्मा, 1999, कथा विवेचना और गद्यशिल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

बी0ए0 भाग तीन

प्रथम प्रश्नपत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश––

1–यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2–प्रत्येक इकाई से दो दीर्घ उत्तरीय एवं चार लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लिखना होगा।

3–प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे––

(क) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X15=60 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ख) 08 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से दो) =8X5=40 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

यूनिट(इकाई)	पाठ्य विषय
एक	साहित्य का इतिहास : हिन्दी साहित्येतिहास–लेखन की परम्परा एवं विकास आदिकाल : नामकरण, काल विभाजन एवं प्रवृत्तियाँ निर्गुण भक्ति–काव्यधारा : भक्ति आन्दोलन एवं निर्गुण काव्य, ज्ञानाश्रयी शाखा का महत्त्व, कबीरदास की भूमिका, प्रेमाश्रयी शाखा का महत्त्व, अवदान, प्रवृत्ति एवं मलिक मुहम्मद जायसी की भूमिका
दो	सगुण भक्ति–काव्यधारा : भाक्ति आन्दोलन का सगुण काव्य, रामभक्ति शाखा का महत्त्व, अवदान, प्रवृत्ति एवं गोस्वामी तुलसीदास की भूमिका, कृष्णभक्ति काव्यधारा का महत्त्व, अवदान, प्रवृत्ति एवं सूरदास की भूमिका रीतिकाव्य : नामकरण, प्रवृत्ति एवं परिप्रेक्ष्य, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, एवं रीतिमुक्त काव्यधारा की विशेषताएँ
तीन	आधुनिक काव्य (छायावाद तक) : नामकरण, प्रवृत्तियाँ, भारतेन्दु युग, हिन्दी नवजागरण एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान, छायावाद का नामकरण, प्रवृत्तियाँ एवं अवदान
चार	आधुनिक काव्य (छायावादोत्तर) : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता–नामकरण, प्रवृत्तियाँ एवं महत्त्व, निबन्ध, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना का उद्भव एवं विकास

सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक ग्रन्थ :

1–रामचन्द्र शुक्ल, 1945, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2–हजारी प्रसाद द्विवेदी, 1948, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई
3–नगेन्द्र, 1976, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
4–बच्चन सिंह, 1996, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5–रामस्वरूप चतुर्वेदी, 1986, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

द्वितीय प्रश्नपत्र : साहित्यशास्त्र एवं हिन्दी आलोचना

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश––

1–यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2–प्रत्येक इकाई से दो दीर्घ उत्तरीय एवं चार लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लिखना होगा।

3–प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे––

(क) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X15=60 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ख) 08 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से दो) =8X5=40 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

यूनिट(इकाई)	पाठ्य विषय
एक	भारतीय काव्यशास्त्र–काव्य का स्वरूप, काव्यहेतु एवं प्रयोजन रस–स्वरूप, अवयव, भेद, अलंकार का स्वरूप, भेद एवं महत्व, काव्य–गुण, काव्य–दोष, शब्द शक्तियाँ
दो	पाश्चात्य काव्यशास्त्र–अनुकृति सिद्धान्त, उदात्तवाद, शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद, यर्थाथवाद, नयी समीक्षा, कल्पना, बिम्ब और प्रतीक
तीन	आलोचना–आलोचना का अर्थ एवं स्वरूप, आलोचक के गुण, आलोचक के दायित्व, आलोचना की पद्धतियाँ
चार	हिन्दी आलोचना एवं प्रमुख आलोचक–हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास : महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, रामविलास शर्मा एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी आलोचना के विकास में योगदान

सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक ग्रन्थ :

1– देवेन्द्र नाथ शर्मा, 2002, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा।

2– नन्दकिशोर नवल, 1981, हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3– बच्चन सिंह,1987, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।

4– भगीरथ मिश्र, 1994, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

5– भगीरथ मिश्र, 1988, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

6– विश्वनाथ त्रिपाठी, 1992, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

तृतीय प्रश्नपत्र : हिन्दी भाषा एवं प्रयोजमूलक हिन्दी

पूर्णांक : 100 समय : 3 घण्टा

निर्देश––

1–यह प्रश्पपत्र चार इकाइयों में विभक्त होगा।

2–प्रत्येक इकाई से दो दीर्घ उत्तरीय एवं चार लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से एक दीर्घ उत्तरीय एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लिखना होगा।

3–प्रश्नपत्र के कुल तीन खण्ड होंगे––

(क) 04 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से एक) =4X15=60 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 500)

(ख) 08 लघु उत्तरीय प्रश्न(प्रत्येक इकाई से दो) =8X5=40 अंक(प्रत्येक के लिए शब्द सीमा 100)

यूनिट(इकाई)	पाठ्य विषय
एक	हिन्दी भाषा : हिन्दी शब्द की उत्पत्ति, उसका अर्थ–विकास, हिन्दी भाषा का विकास, हिन्दी भाषा की सामाजिक–सांस्कृतिक भूमिका हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ, हिन्दी शब्द–समूह और उसके मूल स्रोत
दो	हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण देवनागरी लिपि, नामकरण, उद्भव और विकास, वैज्ञानिकता, त्रुटियाँ, सुधार के प्रयत्न
तीन	प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय, पत्राचार–कार्यालयी पत्र, व्यावसायिक पत्र,, व्यावहारिक पत्र, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण पत्रकारिता : पत्रकारिता का स्वरूप और वर्तमान परिदृश्य, समाचार लेखन और शीर्षकीकरण
चार	प्रमुख जनसंचार माध्यम : प्रेस, रेडियो, टी.वी., फिल्म एवं इण्टरनेट का संक्षिप्त परिचय एवं जनसंचार में इनकी भूमिका अनुवाद : स्वरूप एवं प्रक्रिया, कार्यालयी अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद

सन्दर्भ ग्रन्थ/सहायक ग्रन्थ :

1–कपिलदेव द्विवेदी, 1980, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

2–भालानाथ तिवारी, 1987, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

3–विनोद शाही, त्रयोजनमूलक हिन्दी, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा

4–सत्यनारायण त्रिपाठी, 1981, हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी